बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यासत्रयी में नैतिकता पूर्ण राष्ट्रवादी भावना : स्वतंत्रता आंदोलन में प्रासंगिकता ।

भरत कुमार शर्मा : शोधार्थी , इतिहास एवं संस्कृत विभाग, डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय ,आगरा।

सारांश–

प्रस्तुत लेख ''बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास त्रयी में नैतिकता पूर्ण राष्ट्रवादी भावना : स्वतंत्रता आंदोलन में प्रासंगिकता ।'' के अन्तर्गत बंकिमचन्द्र से जननी जन्मभूमिश्च के प्रति सचान धर्म को स्पष्ट किया है। लेख में बंकिम द्वारा साहित्य प्रेरणा से प्रेरकता तथा चेतनशीलता प्रदान कर राष्ट्रवादी भाव को जगाने का प्रयासकिया है।

लेख में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के अन्तर्गत आने वाली उपन्यास त्रयी 'आनन्दमठ', 'देवी चौधरानी', और 'सीताराम' में भारत माता की दुर्दशा का वर्णन तथा सचानों को उसके उद्धार हेतु पूर्ण समर्पित होने का दार्शनिक, प्रेरक तथा चेतनशील विचार प्रस्तुत किया है। लेख की महत्ता एवं मौलिकता तथा प्रमाणिकता हेतु विचारों विचारकों के विचारों को यथा विश्लेषित किया गया है।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत शोध पत्र ''बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास त्रयी में नैतिकता पूर्ण राष्ट्रवादी भावना : स्वतत्रता आंदोलन में प्रासंगिकता ।'' के अन्तर्गत राष्ट्रवादी दर्शन को प्रस्तुत किया जाना है। बंकिमचन्द्र की उपन्यास त्रयी 'आनन्दमठ', 'देवी चौधरानी', और 'सीताराम' में वर्णित राष्ट्रमाता की दुर्दशा से उद्धार हेतु सन्तान धर्म को स्पष्ट किया जाना है। लेख में 'जननी जन्मभूमिश्च' वेद वाक्य की महत्ता को ध्यान रख राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर मानवीय मनीषा के सुसंगत विकास को यथा विश्लेषित किया जाना है।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की उपन्यास त्रयी – राष्ट्रवादी विचारक दार्शनिक, लेखक, कवि स्वरुप विख्यात बंकिमचन्द्र ने अपने साहित्य की दार्शनिकता, प्रेरकता, तथा चेतनशीलता से सम्पूर्ण राष्ट्र के अन्दर राष्ट्रवादी विचार पैदा किया जिस पराधीनता का बीजारोपण अंग्रेजी हुकूमत के द्वारा मानव सभ्यतान्तर्गत किया गाया था उसका बीजनाश करने हेतु बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने साहित्य में राष्ट्रवाद जैसा अजेय अस्त्र प्रदान किया। उनके द्वारा प्रदस्त राष्ट्रवाद को उन्होंने सन्तान धर्म माना। धरती को माँ के विराट स्वरुप में प्रदर्शित किया और अपने राष्ट्रवाद को वेद वाक्य अनुरुप व्यक्त किया जिसमें कहा गया ''माता भूमिः पुत्राऽहं प्रयित्याः।''[1]

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के विचारानुसार राष्ट्र की प्रगति का आधार उसका अपना इतिहास होता है। अतीत से अनियज्ञ राष्ट्र कमी महानता की श्रेणी में स्थापित नहीं हो सकता। भारत जिस दौरान संकट के दौर से गुजर रहा था उन्होंने तर्क पूर्ण शैली में हिन्दू जीवन भाव जागृत किया यही कारण कि उनकी समस्त रचनाएं हिन्दू जीवन एवं चित्रन की अभ्यान्तर चेतना के प्रकटीकरण से विशेष लक्ष्य प्राप्त होते हैं।[2]

भारतीय राष्ट्रीय संस्कृति संकटग्रस्त थी तब उन्होंने तार्किकता के आधार पर हिन्दू जीवन भाव जागृत किया और 'आनन्द मठ' 'देवी चौधरानी' और सीताराम नाम महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखे जो उपन्यास त्रयी के नाम से विख्यात हुए। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने समृद्ध साहित्य से "विदेशी अत्याचार के विरुद्ध हिन्दू शौर्य भाव प्राण मानवीय उत्साह से चित्रित किया गया – जिसने भारतीय जनमानस के समक्ष सौन्दर्य एवं कल्पना के नवीन परिदृश्य उपस्थित करने के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया है।

उपन्यास सबल उपन्यास त्रयी अत्याचारों से दुर्बल की रक्षार्थ, तथा सभी को न्याय दिलाने में असमर्थ राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। उपन्यास त्रयी राष्ट्र और मानवता की सेवा इनकी आदर्शवारिता, आकांक्षा तथा नैतिकता, समरसता, प्रमाणिकता एवं ईमानदारी पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के प्रति अनुरोग की द्योतक है।

1. **आनन्द मठ–** बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने आनन्द मठ में देशभक्ति की गाथा का प्रस्तुती करण किया जिसके बाद देशवासियों में राष्ट्रवादी भावना का संचार विद्युत वेग से हुआ आनन्द मठ की समाप्ति पर इस तथ्य का स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है कि अपवित्र साधनों द्वारा पवित्र अथवा श्रेष्ठ साधनों की उपलब्धि नैतिक नहीं अतः उसका वरण उन्नत एवं उत्तम नहीं। 1874 में आनन्द मठ कृत वंदेमातरम् राष्ट्रगीत लिखा जिसका प्रकाश उनके द्वारा प्रकीशित पत्रिका बग–दर्शन में हुयी। आनन्द मठ के विश्लेषण उपरान्त यह तथ्य सुस्पष्ट होता है कि ''अता पाप के द्वारा पवित्र उपलब्धि नहीं हो सकती'' बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की उपन्यास त्रयी के विषय में संक्षेप में कहा जा सकता है। इस उपन्यास त्रयी में अपनी साहित्यिक एवं राष्ट्रभक्ति से परापूर्ण प्रतिमा को सर्वोत्कृष्ट रुप में अभिव्यक्त किया गया है। इनमें उनके राष्ट्र निर्माण कारी संदेश एवं दार्शनिक चित्रन का सार तत्व समाहित है।

बंकिम ने स्वराष्ट्रवाद में देवी तथा माता के रुप में मातृभूमि की उपासना का सिद्धांत प्रतिपादित किया श्री अरविन्द के अनुसार ''जब तक मातृभूमि एक मूखाड़ मात्र अथवा व्यक्तियों की भीड़ मात्र से श्रेष्ठतर किसी वस्तु के रुप में मानस चक्षु के सम्मुख प्रकट नहीं होती जब तक वह मस्तिष्क को आच्छादित कर लेने वाले सौन्दर्य के रुप में एक महान देवी एवं मात्रशक्ति का रुप ग्रहण नहीं कर लेती तथा हृदय पर इस प्रकार आधिपत्य नहीं जमा लेती कि समस्त कुछ प्रलोमन गये

माँ और उसकी सेवा की सर्वग्राही उत्कृष्ठ में विलीन हो जाये तब तक नष्ठ प्राय देश का उद्धार करने में सक्षम एवं विस्मयकारी सफलता प्रदान करने वाली देशभक्ति का अब वरण नहीं हो सकता।''

बंकिम ने जिस का लखज्ड में अपनी प्रखरता तथा राष्ट्रवादिता से राष्ट्रभक्ति संदेश दिया उस समय इस राष्ट्रवादी भावना का सर्वथा अभाव था उन्होंने राष्ट्रवाद की जो व्याख्या राष्ट्र पटक पर रखी वह एक उच्च आध्यात्मिक आदर्श बन गया।

सीताराम– बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास त्रयी की सीताराम उपन्यास भी एक इकाई है। जिसमें न्याय सम्मत उत्कंठा एक उच्च आकांक्षा का रुप धारण करती है। यद्यपि अन्त में व्यक्तिगत दुराचार के कारण उसकी पूर्ति में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। उपन्यास त्रयी राष्ट्र की मुक्ति एवं उसके नव निर्माण के लिए श्रेष्ठ भौतिक मूल्यों एवं गुणों का निरन्तर विकास करते हुए उन्हें अपनाने पर जोर देता है।

सीताराम उपन्यास में न्याय पूर्ण सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था की प्रस्थापना हेतु उच्च नैतिक मूल्यों को उसकी आधारशिला के रुप में प्रस्तुत किया गया। इसके नायकों न्यूनताओं युक्त आत्म निमंत्रण का अभाव है। यह सांधातिक दोष का विनाश कर देता है।[3]

देवी चौधरानी– बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की अनेक रचनाओं में विशेषकर 'धर्मतत्व' का प्रतिपादन है। जो श्रेष्ठ सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के सिद्धांत का एक अन्य महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। यह सिद्धांत समस्त मानवीय मनीषा के सुसंगत विकास पर बल देता है। इस उपन्यास में आनन्द मठ की भाँति साधन और साध्य का प्रश्न सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है क्योंकि कथा का आश्चर्य समापन में अन्ततः नायक भवानी पाठक हृदय से अनुभव करते है कि श्रेष्ठ साध्य हेतु उन्होंने डकैती एवं लूट जैसी निन्दनीय साधनों का प्रयोग किया है। अतः अब वे आपको ब्रिटिश सैनिकों के हवाले कर देते हैं।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध पत्र ''बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास त्रयी में नैतिकता पूर्ण राष्ट्रवादी भावना : स्वतंत्रता आंदोलन में प्रासंगिकता ।'' के अन्तर्गत शोधकर्मी ने स्पष्ट किया है कि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की उपन्यास त्रयी–

'आनन्द मठ' में देशभक्ति की गाथा प्रस्तुत कर राष्ट्रवादी भावना का संचार विद्युत वेग समान किया है। आनन्द में उद्घृत है कि वंग–भेग आन्दोलन से व्यक्ति बंकिमचन्द्र का 1874 में लिखा वंदेमातरम् राष्ट्रवादियों हेतु प्रेरणा श्रोत रहा। आनन्द मठ के विश्लेषण उपरान्त स्पष्ट होती है कि ''अब पाप के द्वारा पवित्र उपलब्धि नहीं हो सकती'' उपन्यास त्रयी की दूसरी इकाई सीताराम में स्पष्ट किया है। न्यायपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था की प्रस्थापना उच्च नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। इसके नायक में न्यूनताओं युक्त आत्म नियंत्रण का अभाव है। यह सांधातिक दोष का विनाशकर देती है।

उपन्यास की तीसरी इकाई 'देवी चौधरानी' में स्पष्ट किया है कि धर्मतत्व श्रेष्ठ सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के सिद्धांत का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। उपन्यास में आनन्द मठ समान साध्य और साधन को महत्त्वपूर्ण माना है। अंततः नायक भवानी पाठक यह अनुभव करते हैं कि श्रेष्ठ साध्य हेतु उन्होंने डकैती और लूट जैसे निन्दनीय साधनों का प्रयोग किया है। अतः वे आपको ब्रिटिश सैनिकों के हवाले कर देते हैं।

शोधार्मी ने लेख में स्पष्ट किया है कि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास त्रयी में नैतिक धर्म को सर्वोपरी रखते हुए राष्ट्रवादी चेतना को चरम लक्ष्य तक पहुँचने का कार्य किया ताकि जननी जन्मभूमिश्च का उद्धार सम्भव हो सके।

प्रमुख शब्द :– उपन्यास त्रयी, अजेय, सन्तान धर्म, मातृभूमि, पुत्रारहं प्रथिव्या, आनन्द मठ, देवी चौधरानी, सीताराम, राष्ट्रीयचेतना, आदर्शवादिता, वंदेमातरम्, बग–दर्शन, धर्मतत्व, मानवीय मनीषा का सुसंगत विकास ।

संदर्भ –

1. पृथ्वी सूक्त, अथर्ववेद, डा0 कन्हैयालाल राजपुरोहित, पूर्व उद्घृत पृष्ठ–7
2. अर्ल ऑफ रोनाल्ड, दि हार्ट ऑफ आर्यावर्त, कांस्टेबल एण्ड कम्पनी लिमटेड लन्दन 1925 पृष्ठ–105
3. कन्हैयालाल राजपुरोहित पूर्व उद्घृत पृष्ठ–30

भरत कुमार शर्मा : शोधार्थी , इतिहास एवं संस्कृत विभाग, डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय ,आगरा।